कभी तो आओ सेक्टर 22 में 'स्मार्ट सिटी' वालो

स्मार्ट सिटी फरीदाबाद का सेक्टर 22, स्मार्ट लूट की भद्दी बानगी पेश करता हुआ

विवेक की विशेष रपट

सेक्टर 22 पिछले 6 महीनों से ऐसा पड़ा है जैसे मृत्युशय्या पर भीष्म पितामह पड़े थे। यहां एक सड़क हुआ करती थी जिसे गत दिसम्बर में खोदना शुरू किया गया जो आज तक खोदी जा रही है।

सेक्टर में किसी भी दिशा से प्रवेश करना उतना ही कठिन है जितना अभिमन्यु के लिए चक्रव्यूह को भेदना। जहाँ तक नजर जा सकती है वहाँ तक गड्डे और उनकी मिट्टी में सनी सड़क है जिसपर चलना असंभव है।

सेक्टर निवासी एक 40 वर्षीय दम्पति ने बताया कि ये सड़क बीते वर्ष के दिसम्बर माह से सीवर लाइन डालने के लिए खोदी गई है। आज तक सीवर लाइन का काम पूरा हुआ है या नहीं ये उनको नहीं पता। पर हां सड़क अब गड्ढे में जरूर बदल गई है। कुछ रोड पहले ही उनके बेटे को सेक्टर 22 से निकल कर सेक्टर 9 में किराये का मकान लेना पड़ा क्योंकि उसकी शादी का रिश्ता ले कर लोग पंजाब से आने वाले हैं। ऐसी टूटी सड़कें दिखा कर रिश्ता तो नहीं तोड़ सकते।

गुरचरण कौर की तकलीफ ऐसी है कि खुद भगवान भी उसे सुलझा नहीं सके हैं। भगवान के दर्शनों के लिए गुरूद्वारे जाना इस खुदी सड़क से ऐसा फिसलनदार हुआ कि 65 वर्ष की आयु में टांग ही टूट गई। अब जो ठीक हुई है तो बाहर कहीं निकल कर जा ही नहीं सकती। क्योंकि सड़क पर चलना जान जोखिम में डालने जैसा ही है।

50 वर्षीय सतपाल सिंह का आक्रोश इतना था कि यदि यहाँ के स्थानीय विधायक मूलचंद उन्हें मिल जाते तो शायद इसी खुदी सड़क में उनकी दरगाह बन जाती।

सतपाल जी के अनुसार इतनी निकृष्ट सरकार आज तक सत्तानशीं नहीं हुई है जो 6 महीनो में एक सीवर लाइन का काम तक पूरा न कर पाती हो। बरसात से कीचड़ में बदली सड़क ने सतपाल जी को पार्क और दूसरे सामाजिक मेल मिलापो से दूर कर दिया है।

26 वर्षीय सुनील के घर के बिल्कुल सामने भी कीचड़ में सनी पड़ी ही सड़क है। सुनील ने कहा कि शीतल खटाना जो भाजपा से पार्षद हैं इस इलाके की, हमारी बिल्कुल भी सुनती नहीं। सेक्टर 22 के स्थानीय निवासी मिल कर पार्षद जी के

पास इस खुदी पड़ी सड़क की समस्या ले कर जा चुके हैं पर उनके आश्वासन के अलावा आज तक कुछ हासिल नहीं हुआ है। इसी सेक्टर में कांग्रेस के पूर्व विधायकआनंद कौशिक का भी घर है। हमने जब सुनील जी से कहा कि आप पूर्व विधायक के पास अपनी समस्या ले कर क्यों नहीं जाते, तो इसपर उनका मानना था कि जब वोट भाजपा को दिया है तो मदद की गुहार कांग्रेस के विधायकों से क्यों की जाए?

सेक्टर में ज्यादातर हिस्सा खुदा पड़ा है और बचे हिस्सों में भी खुदाई का काम चल रहा है। 40 वर्षीया सतीश ने वाशिंग मशीन के पानी को सड़क पर फेंकते हुए कहा कि भाई साहब सीवर लाइन का काम तो 6 महीने से चल रहा है पर पूरा होगा 6 साल में। इसी मुद्दे पर कई नेता वोट बटोरने आएँगे और यहाँ की बेवकूफ जनता मूर्ख बन कर वोट दे आएगी। साथ की ही संजय कॉलोनी और जवाहर कॉलोनी की सड़कें इतनी बढ़िया हैं, पर हमारा सेक्टर बुरे हाल है। इसका कारण है कि एक अनधिकृत कालोनी होने के नाते वहाँ की वोट संख्या ज्यादा है और सेक्टर 22 में इतने वोट नहीं हैं जिस कारण हमारी सुनवाई नहीं होती।

सतीश जी की पत्नी ने बताया कि मुख्य सीवर लाइन को खुदे कई महीने बीत गए पर आज तक घरों को इन सीवर लाइनों से नहीं जोड़ा गया है। उन्होंने पार्षद साहिबा से भी बात की जिनके अनुसार फरीदाबाद नगर निगम से क्लियरेन्स मिलने के बाद ही इन लाइनों को जोड़ा जा सकेगा। इसमें अभी तीन माह का समय और लगेगा। पर वो तीन माह को बीते भी तीन माह हो गए हैं।

शीतल जो ईडब्लूएस के प्लाट में मकान बना कर रहती हैं को हमेशा महसूस होता है कि 165 और 220 गज के प्लाट वालों की समस्याओं का समाधान तो हो जाता है परन्तु 65 गज वाले गरीबों की कोई सुनवाई नहीं होती। पानी की समस्या इतनी है कि बूस्टर पंप भी फेल हो जाता है और टैंकर मंगा कर जैसे तैसे पानी की व्यवस्था करते हैं इस सेक्टर के लोग।

टाटा स्टील प्लांट में कार्यरत संजीव ने 40 वर्षीय जीवन में ऐसा बदहाल नजारा इस सेक्टर का पहले कभी नहीं देखा। सीवर लाइन के नाम पर खोदा गया सेक्टर बिना सीवर के ही अच्छा था। आज भी सेप्टिक टेंकों की सफाई टैंकरों के माध्यम से ही करानी पड़ती है। समस्या ये है कि टैंकर इन खुदी सड़कों में आ भी नहीं पाते और जो आ जाए तो घर के आगे इतना कीचड़ बन जाता है कि उसमें उठती बदबू जीवन दुश्वार कर देती है। इसी से परेशान होकर अपने पैसों से सामने की सड़क पक्की कराई पर कीचड़ इतना है कि सब बेकार हो गया कराना।

सेक्टर में दीन दयाल उपाध्याय के नाम का एक पार्क भी है। इसका उद्घाटन विधायक मूलचंद ने पार्षद शीतल खटाना के साथ मिल कर किया था। पर पार्क का फीता काटने के बाद आज तक इसकी सुध नहीं ली किसी ने भी। घास के नाम पर तिनके ही मिले इस सेक्टर के हर पार्क में। बच्चों से पूछने पर पता चला कि हाल में हुई वर्षा ने उनको घरों में कैद कर दिया क्योंकि पार्क तो कीचड में सने पड़े थे।

वही अभिभावकों की चिंता का एक बड़ा कारण इन गड्डों और पार्कों में जमा होने वाला पानी भी है। डेंगू और मलेरिया जैसी बीमारियों का खदान बन चुके इन गड्ढों से निजात फिलहाल तो मिलना मुश्किल प्रतीत हो रहा है। और रही सही कसर बीमार होने पर बीके अस्पताल जैसे शापित संस्थान पूरी कर देते हैं।

सेक्टर में कार्यरत खुदाई के काम की पड़ताल के लिए एक छोटे ठेकेदार से मुलाकात हुई। नाम न बताने की शर्त पर उन्होंने कहा कि मुख्य ठेकेदार दिल्ली के मदन मोहन वासुदेव जी हैं और उन्होंने ये काम कुछ कम दर से मुझे सौंपा है। बड़े ठेकेदार खुद बहुत परेशान हैं क्योंकि निगम एक तो पेमेंट वक्त से नहीं करता दूसरे बहुत परेशान करता है। ऐसा नहीं है कि वो तेज काम नहीं करना चाहते। वो तो तेजी से काम समाप्त कर बिल पास कराना चाहते हैं पर क्या करें नगर निगम वाले कोई न कोई अड़चन लगा ही देते हैं।

22 घंटे काम करने वाली मोदी सरकार के 22 घंटे किस काम में जाते हैं ये जानना हो तो सेक्टर 22 को देख कर समझ आ सकता है। केवल विपक्षी पार्टियों की कमियां और पाकिस्तान को गाहे बगाहे गालियाँ देने के भाजपा सरकार दूसरा कोई काम सार्थक रूप से करती नजर नहीं आ रही। बिना किसी योजना के नोटबंदी और उसी तर्ज पर बिना किसी रोड मैप के सड़कों की खुदाई पूरे फरीदाबाद में बदस्तूर जारी है।

सेक्टर 22 के स्थानीय विधायक मूलचंद जी को सेक्टर । और 10 की मार्किट से अतिक्रमण करा पैसे उगाहने से फुर्सत नहीं है जो इस सेक्टर की भी सुध ले सकें। अब ये आवश्यक है कि जनता इनकी खबर आने वाले चुनावों में ले ताकि मनोहर लाल खट्टर का रोड शो को भी सही जवाब मिल सके।

विकास लूट का चेहरा बना पृथला गाँव

फ़रीदाबाद से पलवल की ओर मथुरा हाई वे पर 30 किमी पर बसा पृथला गाँव विकास के नाम पर देश को बर्बादी की तरफ धकेलती सरकारों का चेहरा साफ साफ दिखा देगा। इंडस्ट्रीज से घिरा ये गाँव अब तहसील घोषित हो चुका है। इंडस्ट्रीज ने यहाँ के भूजल को ऐसा दूषित किया है कि इस गाँव का पानी भी पीने योग्य नहीं रहा।

जिस गाँव में कभी घड़े भर भर कर पानी पीया जाता होगा आज वहाँ एक टाटा का छोटा ट्रक भर कर पानी की 20 लीटर वाली बोतलें 10 रुपए की दर से सप्लाई की जाती हैं। गाँव के लोग पानी माफिया के हाथों लुटने को मजबूर हैं क्योंकि इन सबके पीछे हाथ है चुनी हुई सरकारों का। विकास का दंभ भर के सत्ता में बैठी खट्टर सरकार को शायद ही ये चिंता हो कि उजड़ते गाँव को कैसे बचाया जाए। पृथला के आम निवासियों से बात करने पर यहाँ के भूजल की स्थिति मालूम पड़ी जो इतना दूषित हो चुका है कि अब आर ओ लगा कर भी पीने योग्य पानी नहीं ले सकते। हर 10 दिनों में आर ओ खराब हो जाता है और उसका खर्च करने से बेहतर ये 10 रुपये की बोतल लेना है।

हरिजन बस्ती का हाल ज्यादा बुरा है। यहाँ के सामाजिक कार्यकर्ता धीरू ने बताया कि यूँ तो सभी जगह की हवा खराब हो चुकी है परन्तु इस गाँव में समस्या इस कदर बढ़ गई है कि हर घर में एक सांस का मरीज़ आपको मिल जाएगा। इन समस्याओं को लेकर धरना प्रदर्शन और घेराव भी किया जा चुका है पर सब बेकार ही निकला। अब तो ये जहरीला पानी और हवा हमारी नियति बन चुका है। ज्यों ही एक पूंजीपति अपनी लूट से समाज और पर्यावरण के लिए समस्या पैदा करता है वैसे ही दूसरा उसका समाधान एक नए लूट के आईडिया की शक्ल में ले आता है।

मजबूर होते हैं लूट के चक्र में फंसने को। पानी माफिया की पहुँच भारत के हर गाँव तक होती जा रही है। कारण ये कि भूजल दूषित हो चुका है। हवा जहरीली है, इस दावे के साथ और सरकारों के आशीर्वाद से मास्क बनाने की होड़ अब उन कंपनियों में लग चुकी है जिन्होंने इस हवा को दूषित किया है।

विकास के नाम पर पूंजीपतियों की बेइंतहा जेबें भरने वाली सरकारें पहले गाँव के लोगों की जमीने लेती हैं और इन्ही जमीनों पर बिना ट्रीटमेंट प्लांट के बने कारखाने पर्यावरण के साथ साथ सभ्यता और संस्कृतियों को भी समाप्त कर रहे हैं। अगर समय रहते हमने विकास की असल अवधारण को नहीं पहचाना तो भारत पूरे देश का हश्र क्या होगा ये पृथला गाँव चीख-चीख कर बता रहा है।

-विवेक

पुलिस चौकी की जगह महिला सैल बैठा दिया लेकिन ओयो होटल का काला धंधा जारी

फ़रीदाबाद (म.मो.) 'मज़दूर मोर्चा' के 18-24 मार्च 2018 के अंक में शीर्षक ऐन पुलिस चौकी के सामने **'ओयो' होटल का सेक्स धंधा'** में प्रकाशित किया गया था कि सेक्टर 21 बी स्थित पुलिस चौकी से मात्र 50 मीटर के फ़ासले पर कोठी नम्बर 325 और 530 में चल रहे होटल ओयो में खुले आम देह व्यापार का धंधा चल रहा है। धंधे में किसी प्रकार की बाधा न डालने के एवज में पुलिस चौकी को 60 हज़ार की मंथली के अलावा खाने-पीने की फ़टीक अलग से बंधी थी।

रिहायशी क्षेत्र में किसी भी प्रकार की व्यसायिक गतिविधि नहीं चलाई जा सकती। इसके बावजूद रिहायशी क्षेत्र में इस धंधे को चलाये रखने के लिये नगर निगम एवं 'हूडा' वालों की सेवा अलग से की जाती है। इसी सेवा के चलते सेक्टरवासियों द्वारा कई बार शिकायतें करने के बावजूद न तो पुलिस के कान पर जूं रेंगती है और न ही 'हूडा' वालों के। दरअसल इस स्मार्ट शहर में जिसको भी किसी अवैध काम को रोकने का अधिकार दिया जाता है वही उस अधिकार का इस्तेमाल नोट छापने के लिये करने लगता है।

खबर प्रकाशित होने के बाद लगा कि पुलिस कमिश्नर हरकत में आये और उस पुलिस चौकी को ही उड़ा दिया। उसकी जगह यानी उसी इमारत में महिला सैल को तैनात कर दिया जिसकी इन्चार्ज एक महिला इंस्पेक्टर है। लेकिन इस सबके बावजूद होटल में चलने वाला गोरख धंधा 5-7 दिन बंद रहने के बाद फ़िर से फुल स्पीड पर चल निकला। हो सकता है इस बार मंथली सीधे थाना एनआईटी अथवा चौकी 21-डी ने बांध ली हो।

जैसा कि पहले प्रकाशित किया जा चुका है कि यहां पर ग्राहकों की मांग पर स्कूलों की लड़कियों को लाया जाता है। इन्हें लाने के लिये बाकायदा बाइक सवार तथा ओला ऊबर टैक्सियां रखी हुई हैं जो लड़कियों को मैट्रो स्टेशनों अथवा अन्य चिन्हित स्थानों से लाते ले जाते हैं। स्कूली लड़कियों की सेवायें केवल दिन में 2-3 बजे तक ही उपलब्ध कराई जाती हैं यानी स्कूल टाइम के अनुसार, बाकी सेवायें तो हर वक्त उपलब्ध हैं।

वर्ष 2012 में एनआईटी के 5 नम्बर स्थित एक घर में भी कुछ इसी तरह का गैस्ट हाउस चलाया जा रहा था जिसमें इसी तरह लाई गयी एक छात्रा की हत्या हो गयी थी। उस वक्त पुलिस ने गैस्ट हाउस को चलने देने की जिम्मेवारी नगर निगम पर डाल कर अपना पल्ला झाड़ लिया था। सभी जानते हैं कि इस तरह के काले धंधे पुलिस की मिलीभगत के बिना तो कतई नहीं चल सकते।